श्री कृष्ण चालीसा

॥ दोहा ॥

बंशी शोभित कर मधुर,
नील जलद तन श्याम।
अरुण अधर जनु बिम्ब फल,
नयन कमल अभिराम॥

पूर्ण इंद्र अरविंद मुख,
पीताम्बर शुभ साज।
जय मन मोहन मदन छवि,
कृष्ण चन्द्र महाराज॥

॥ चौपाई ॥

जय यदु नंदन जय जग वंदन,
जय वसुदेव देवकी नंदन।
जय यशोदा सुत नंद दुलारे,
जय प्रभु भक्तन के दृग तारे॥

जय नटनागर नाग नथइया,
कृष्ण कन्हैया धेनु चरइया।

पुनि नख पर प्रभु गिरिवर धारो,
आओ दीनन कष्ट निवारो॥

वंशी मधुर अधर धरि टेरी,
होवे पूर्ण विनय यह मेरी।
आओ हरि पुनि माखन चाखो,
आज लाज भारत की राखो॥

गोल कपोल चिबुक अरुणारे,
मृदु मुस्कान मोहिनी डारे।
रंजित राजिव नयन विशाला,
मोर मुकुट बैजन्ती माला॥

कुंडल श्रवण पीतपट आछे,
कटि किंकणी काछनी काछे।
नील जलज सुन्दर तनु सोहे,
छवि लखि सुर नर मुनि मन मोहे॥

मस्तक तिलक अलक घुँघराले,
आओ कृष्ण बांसुरी वाले।
करि पय पान, पूतनहि तारयों,
अका बका कागासुर मारयो॥

मधुवन जलत अगिन जब ज्वाला,
भये शीतल लखतहिं नंदलाला।

सुरपति जब ब्रज चढ़्यो रिसाई,
मूसर धार वारि वर्षाई॥

लगत-लगत ब्रज चहन बहायो,
गोवर्धन नखधारि बचायो।
लखि यसुदा मन भ्रम अधिकाई,
मुख मंह चौदह भुवन दिखाई॥

दुष्ट कंस अति उधम मचायो,
कोटि कमल जब फूल मंगायो।
नाथि कालियहिं तब तुम लीन्हें,
चरण चिह्न दै निर्भय कीन्हें॥

करि गोपिन संग रास विलासा,
सबकी पूरण करि अभिलाषा।
केतिक महा असुर संहारियो,
कंसहि केस पकड़ि दै मारयो॥

मात-पिता की बन्दि छुड़ाई,
उग्रसेन कहँ राज दिलाई।
महि से मृतक छहों सुत लायो,
मातु देवकी शोक मिटायो॥

भौमासुर मुर दैत्य संहारी,
लाये षट दश सहस कुमारी।

दे भीमहिं तृण चीर सहारा,
जरासिंधु राक्षस कहँ मारा॥

असुर बकासुर आदिक मारयो,
भक्तन के तब कष्ट निवारियो।
दीन सुदामा के दुःख टारयो,
तंदुल तीन मूंठ मुख डारयो॥

प्रेम के साग विदुर घर मांगे,
दुर्योधन के मेवा त्यागे।
लखि प्रेम की महिमा भारी,
ऐसे श्याम दीन हितकारी॥

मारथ के पारथ रथ हांके,
लिया चक्र कर नहिं बल थांके।
निज गीता के ज्ञान सुनाये,
भक्तन हृदय सुधा वर्षाये॥

मीरा थी ऐसी मतवाली,
विष पी गई बजाकर ताली।
राणा भेजा सांप पिटारी,
शालिग्राम बने बनवारी॥

निज माया तुम विधिहिं दिखायो,
उर ते संशय सकल मिटायो।

तब शत निन्दा करी तत्काला,
जीवन मुक्त भयो शिशुपाला॥

जबहिं द्रौपदी टेर लगाई,
दीनानाथ लाज अब जाई।
तुरतहिं वसन बने नंदलाला,
बढ़े चीर भये अरि मुँह काला॥

अस अनाथ के नाथ कन्हैया,
डूबत भंवर बचावत नइया।
सुन्दरदास आस उर धारी,
दयादृष्टि कीजै बनवारी॥

नाथ सकल मम कुमति निवारो,
क्षमहु बेगि अपराध हमारो।
खोलो पट अब दर्शन दीजै,
बोलो कृष्ण कन्हैया की जै॥

॥ दोहा ॥

यह चालीसा कृष्ण का,
पाठ करे उर धारि।
अष्ट सिद्धि नव निद्धि फल,
लहै पदारथ चारि॥

1

---

[1] सौजन्य से:

धर्मयात्रा **(DharmYaatra)**

वेबसाइट: https://dharmyaatra.in/

व्हाट्सऐप नंबर: +917410957600

नोट: यदि आप वैदिक ज्ञान 🔱, धार्मिक कथाएं 🕉️, मंदिर व ऐतिहासिक स्थल 🛕, भारतीय इतिहास, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य 🧠, योग व प्राणायाम 🧘, घरेलू नुस्खे 🥥, धर्म समाचार 📰, शिक्षा व सुविचार 👣, पर्व व उत्सव 🪔, राशिफल 🌌 तथा सनातन धर्म की अन्य धर्म शाखाएं ☸️ (जैन, बौद्ध व सिख) इत्यादि विषयों के बारे में प्रतिदिन कुछ ना कुछ जानना चाहते हैं तो आपको धर्मयात्रा संस्था के विभिन्न सोशल मीडिया खातों से जुड़ना चाहिए। उनके लिंक हैं:

व्हाट्सएप ग्रुप व्हाट्सएप चैनल

फेसबुक पेज इंस्टाग्राम प्रोफाइल